❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

गुहादित्य

ऐतिहासिक नाटक

लेखक--श्री शिवप्रसाद

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

हारीत—मुनि

शिलादित्य—बल्लभी-नरेश

गुहादित्य—शिलादित्यका पुत्र

भीमकर्ण—बल्लभी राष्ट्रका महाबलाध्यक्ष

जीवमित्र—बल्लभी राष्ट्रका महामात्य

मांडलिक—ईडर राष्ट्रका भील नरेश

बाली } भीलकुमार
तक्षक }

प्रचंड—बल्लभी राष्ट्रका चारण

पुष्पवती—शिलादित्यकी रानी

कमला—विधवा ब्राह्मणी

शवरी—भील नारी

विमला—भील बालिका

भील नारियां, भीलकुमार, सैनिक आदि

ऐतिहासिक नाटक

१

ईडर राज्यमें एक गांव, वीरनगर

(*शवरीका प्रवेश*)

शवरी—उत्पातपर उत्पात ! इस ब्राह्मणीको गांवमें बसाकर हमने अपने शिर आप आपत्ति बुलाईहै। इसका पुत्र हर घड़ी सौ-सौ उत्पात मचाताहै, इससे कहो तो मक्खन-सी कोमल बातें करके सब टालदेतीहै।

प्र० भिलनी—बहिन ! क्या होगया ?

शवरी—क्या होगया ? देखती नहीं आज उस दुष्ट गुहने बाली और तक्षककी क्या दशा कीहै ? मेरे पुत्रोंके प्राण आज उस ब्राह्मणीके छोकरेने हरलियेथे, और तुम कहतीहो कि क्या होगया ? जब मेरे दोनों पुत्रकी मृत्यु होजाती तब ही तुम समझती कि कुछ हुआहै ?

द्वि० भिलनी—शवरी ! इस बेचारीपर इतना क्यों बिगड़ती है ? इसने तो सीधे भावसे पूछाहै कि क्या होगया।

शवरी—सीधे भावसे ? तू भी सीधी और यह भी सीधी। इस गांवकी सभी नारियां मेरे पुत्रोंसे ईर्ष्या करतीहैं। चाहतीहैं कि दोनोंकी मृत्यु होजाती तो हम आनन्दके गीत गातीं। मेरे पुत्रोंकी इतनी दुर्दशा होगई, घाव लगगए, रुधिर निकलनेलगा, हाथ-पैर टूटगए; और तुम कहतीहो कि क्या होगया।

द्वि० भिलनी—बालीकी मां ! तू तो बन्दरकी विपत्ति घोड़ेके शिर मढ़रहीहै। तेरे पुत्रोंको दुखाया कमलाके पुत्रने और तू झगड़नेलगी हमसे ! कलियुग है न, किसीसे भली बात करने का यही फल मिलताहै।

(बाली और तक्षकका रोते-चिल्लाते और लंगड़ातेहुए प्रवेश)

शबरी—इसे कहतेहैं, 'दुखाया' ! देखरहीहो बालीको लंगड़ा बनादिया और तक्षकके हाथ तोड़डाले।

प्र०भिलनी—तक्षक ! क्यों रोतेहो ? तुम्हें किसने सतायाहै ?

तक्षक—चाची ! हम दोनों भाई जामुनपर चढ़ेथे कि गुह पेड़के नीचे आकर दोनों हाथोंसे बलपूर्वक बार-बार पेड़को हिलानेलगा। एक-दो झटके लगते ही हम लोग पकेहुए जामुनकी भांति टपाटप नीचे गिरगए। यह देखो,हमारे हाथ-पैरोंसे कितना रुधिर निकलरहाहै ?

शबरी—अब मैं अधिक नहीं सहसकती। अब तक मैंने कमलाको ब्राह्मणी समझकर कुछ नहीं कहा। दुष्टोंको अपनी पड़ोसमें बसानेका कभी अच्छा फल नहीं मिलता। बेरसे प्रेम करनेमें सदा कांटे ही चुभेंगे। अब आगईहै चिकनी-चुपड़ी बातें बनानेकेलिए। मैं अधिक नहीं सहसकती। आज मैं इसे सदाके लिए ठीक करदूंगी।

(कमलाका प्रवेश)

यह देख, अपने सपूतकी करतूत। मेरा एक बालक सदाकेलिए लंगड़ा बनादिया और दूसरा सदाकेलिए करहीन। बाली और तक्षकको तो उसने आज मार ही डालाथा। तीस गज ऊंचे पेड़से गिरादिया। इनके शिर फूटगए, हाथ-पैर टूटगए, रुधिरसे लथपथ होगए। आज चारिणी देवीजी न बचाती तो मेरा घर डूब गयाथा, बेड़ा चौपट होगयाथा।

प्र० भिलनी—कमला ! तू गुहको समझाती क्यों नहीं ? कल उसने मेरे राधा और दाताके शिर पकड़कर दोनोंको कई बार बलपूर्वक टकराया जिससे उनके शिरोंसे रुधिर निकलने लगा। वे रोते-चिल्लातेरहे किन्तु गुहने उन्हें छोड़ा नहीं।

द्वि० भिलनी—दूसरेकी आंखोंमें आंसू देखकर तो उसे हंसी आतीहै। दूसरेको रोते-चिल्लाते देखकर वह आनन्दसे नाचउठताहै। अभी परसोंकी बात है उसने मीणोंके छोकरेको पकड़कर गहरे तालमें फेंकदिया। यदि मैं वहां न पहुंचती तो बेचारा डूब ही गयाहोता।

शवरी—इस गुहके उत्पात बढ़ते ही जातेहैं। अभी बारह-चौदह वर्षका नहीं हुआ कि इसने हम सबको तंग करदियाहै, सारे गांव के छोरों को इसने शैतान बना दिया है। अपनी टोली बनाकर जिधर निकलजाताहै उधरके खीरे-मतीरे, मकई आदिकी लूट मचादेताहै। चिड़ियाओंके घोंसले तोड़ डालताहै, बच्चों और अंडोंको भूमिपर पटककर मारडालताहै। गायोंका दूध दुहकर पीजाताहै।

प्र० भिलनी—दिन भर जंगलोंमें शिकार खेलताहै और नदी-तालाबोंमें मछली मारताहै। ऐसा निर्दयी राक्षस तो मीणोंमें भी नहीं होता।

द्वि० भिलनी—अभी बारह-चौदह वर्षका है, और इतने उत्पात मचाताहै, जब बड़ा होगा तो ईडरसे सब भील-मीणोंको मार-मिटादेगा।

(नेपथ्यसे धुएकी लपटें उठतीहैं। घास और सूखी लकड़ियां लेकर कुछ भील कुमारोंका प्रवेश।)

प्र० भीलकुमार—(चलते-चलते) आज बड़ा आनन्द आएगा।

द्वि० भीलकुमार—(चलते-चलते) बहुत मोटा है, बड़ा स्वादिष्ट होगा।

तृ० भीलकुमार—(चलते-चलते) ऐसा स्वाद हरिन और शशकमें भी कहां मिलेगा ?

प्र० भीलकुमार—(चलते-चलते) यह गुह हमारा भगवान ही है। जबसे यह यहां आयाहै हमें नित्य कितना आनन्द देताहै !

(भीलकुमारोंका प्रस्थान)

बाली और तक्षक—चलो, हम भी चलें।

(दोनोंका भागतेहुएप्रस्थान)

कमला—देख शवरी ! जिनके तू सदाकेलिए हाथ-पैर टूट गए बतातीथी वे कितनी तीव्र गतिसे भागेहैं !

प्र० भिलनी—यह तो बालकोंका स्वभाव ही है, वे कष्ट तो जानते ही नहीं।

(नेपथ्यसे बकरेके चिल्लानेका शब्द)

(नेपथ्यमें) गुह—बस एक झटकेमें मैंने इसका शिर उड़ा दिया। शीघ्र इसे भूनडालो। जब तक फूलनगरवाले पहुँचतेहैं तब तक इसे पेटमें पहुँचाओ।

क्यों न खाय हम बकरे मोटे ?
क्या हमहैं सिंहोंसे छोटे ?
क्या हम सोंपोंसे कम खोटे ?
जो रोकेगा हमें, तड़ातड़
मारेंगे हम उसपर सोंटे ! क्यों न० ॥

(चूंडारावके साथ कुछ ग्रामीणोंका खड्ग लेकर प्रवेश)

चूंडाराव—शवरी ! तुम्हारे गांवके छोकरे मेरा देवीका बड़ा बकरा पकड़कर इधर ही लाएहैं। तुमने उन्हें देखाहै ?

शवरी—बकरा पकड़कर लेगए ? यह सब गुहकी करतूत है।

प्र० ग्रामीण—(सूंघकर) बकरा मारागयाहै राव जी ! सूंघो तो बकरा भूननेकी गन्ध आरहीहै ।

शवरी—हां ठीक है । अभी कुछ समय पूर्व कुछ छोकरे घास और लकड़ियां लेजारहेथे । अभी-अभी बकरेके चिल्लानेका शब्द सुनाईदियाहै । वह देखो धुंआ उठरहाहै । बकरा मारागयाहै, रावजी !

चूंडाराव—सचमुच बकरा मारागयाहै । उसे तो मैंने चारिणी-देवीके नामपर उत्सर्ग कियाथा । अब क्या होगा ?

प्र० ग्रामीण—देवी गांवको भस्म करडालेगी ।

द्वि० ग्रामीण—महामारी फैलादेगी ।

तृ० ग्रामीण—लोग तड़प-तड़पकर मरजाएंगे ।

(*नेपथ्यमें*) गुह—खाओ, खाओ, शीघ्र सब उड़ाजाओ । फूलनगर वालोंके आनेके पूर्व ही बकरेको पचालो ।

चूंडाराव—चलो, इन बकरा खानेवालोंको पकड़लो ।

(*कमलाके अतिरिक्त सबका भागतेहुए प्रस्थान*)

कमला—गुहके उत्पातोंकी पराकाष्ठा होगईहै । अब तो यह दूर-दूरके गांववालोंपर भी अत्याचार करनेलगा । मुझ अभागिनीने इसे पालकर क्या पाया ? केवल अपयश । लोग इसे मेरा पुत्र समझकर मुझे ही दोषी समझतेहैं । मुझे अब इस दुष्टसे संबंध-विच्छेद करना ही होगा ।

(*अन्तर्यवानकारोहण । जलतीहुई अग्निके चारों ओर गुहके साथ भीलकुमारोंका गीत और नृत्य*)

लूटचलो आनन्द चार दिन, कबतक जगमें जीनाहै ?
बार-बार इस जगमें आकर किसने सुख-मधु पीनाहै ?
प्रस्तुत मधुर-मधुर सुख तजकर मूर्खो ! क्या फल पातेहो ?
अपर लोकके व्यर्थ स्वप्नमें क्यों निजको तड़पातेहो ?

(नेपथ्यमें—चूंडाराव—यहां हैं। पकड़ो पकड़ो।)

गीत—

नाचो, गाओ, अमल कमल-सा अपना मन विकसित करदो।
हास्य, लास्य, मादकता-पुटसे अखिल विश्व सुरभित करदो॥
मुक्त कोकिला-सा पंचम गा नभ-भूको गुंजित करदो।
बह प्रमोद-सरितामें जगको क्षण भर तो प्रमुदित करदो॥
नाचो, गाओ०॥

(पार्श्वद्वारसे चूंडारावके साथ ग्रामीणोंका भाले-खड्ग लेकर पुनः प्रवेश। उनके पीछे शवरी और दोनों भीलनारियोंका पुनः प्रवेश।)

चूंडाराव—बकरा कहां है?

गुह—हमारे पेट में। *(अपने पेटपर हाथ फेरकर)* इस पेटमें। *(हंसताहै।)*

सब भीलकुमार—इस पेटमें। *(अपने पेटपर हाथफेरते हुए हसतेहैं।)*

गुह—रावजी! हुआ बड़ा स्वादिष्ट। बड़ा आनन्द आया। बिना नमकके ही हम सारा बकरा खागए! *(हसताहै।)*

चूंडाराव—*(भाला उठाकर क्रोधसे)* चारिणी देवीकेलिए अर्पित मेरे मोटे बकरेको खाकर अब इसप्रकार हंसतेहो? तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं अभी तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करडालताहूँ।

गुह—टुकड़ेकरनेका स्वप्न देखनेसे पूर्व ही हमलोग तुम्हें ऐसा स्वप्न दिखादेंगे कि फिर तुम्हें कभी स्वप्न दिखानेवाली नींद न आसकेगी। हम आधीरातको तुम्हारे गृहोंपर अग्नि धधकादेंगे।

बाली—हम दिन-दहाड़े तुम्हारे खेतोंसे मकई तोड़लेंगे।

तक्षक—हम प्रातः-सायं तुम्हारे बकरोंको भून-भूनकर कलेवा बनालेंगे। *(सब भीलकुमार हंसतेहैं।)*

गुह—चारिणीदेवीका बकरा खालिया तो क्या बिगड़ गया ? खानेकेलिए तो वह था ही। पुरोहितने नहीं खाया हमने खालिया। क्या पुरोहितकी जिह्वासे हमारी जिह्वा स्वादलेना कम जानतीहै ?

बाली—क्या पुरोहितके पेटसे हमारे पेट छोटे हैं ? (*सब भीलकुमार हसतेहैं।*)

शवरी—चुप। देखा, इस गुहने मेरे बच्चोंको कितना बिगाड़ दियाहै ?

बाली—गुह तो हमें नित्य हरिनोंका, मछलियोंका, बकरोंका मांस खिलाकर प्रसन्न रखताहै, तुम कहतीहो बिगाड़दिया !

चूंडाराव—तुम इस प्रकार नहीं मानोगे। लातोंके भूत बातोंसे नहीं मानते। मैं अभी भीलराज मांडलीकके पास जाताहूँ।

कमला—(*सन्मुख आकर और हाथ जोड़कर*) मेरे बच्चेका अपराध क्षमा करो। भीलराजके पास न जाओ।

शवरी—यह सब इसके छोरे गुहकी करतूत है। जाओ, अवश्य जाओ। इस ब्राह्मणी और इसके दुष्ट छोरेको यहांसे निकलवादो।

गुह—जाओ, जाओ। जो कुछ तुमसे होसकताहै करलो।

सब भीलकुमार—जाओ, जाओ। (*सब भीलकुमार चूंडारावके पीछे हंसते और ताली बजातेहुए जातेहैं।*)

चूंडाराव—चुपरहो कुत्तो ! (*क्रोधित होकर मारनेकेलिए झपटताहै, भीलकुमार भागजातेहैं।*) कमला ! मैं भीलराजके पास जारहाहूँ, अब अपना कल्याण न समझो।

(*चूंडारावके साथ ग्रामीणोंका प्रस्थान*)

प्र० भिलनी—कमला ! तू तो इतनी सीधी है, तेरा ऐसा दुष्ट बालक कैसे हुआ ?

द्वि० भिलनी—तुझ ब्राह्मणीकी कोखसे ऐसा राक्षस चांडाल कैसे उत्पन्न हुआ ? लोग कहते हैं, "मांपर पूत पिता पर घोड़ा।

बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।" पर यह बात मिलती नहीं। तेरा पति तो साक्षात् देवता था।

प्र० भिलनी—उस-जैसा सज्जन पुरुष तो कोई कहीं मिलेगा ही नहीं।

शवरी—नहीं। यह कमला बाहरसे मक्खन और अन्दरसे पत्थर है। तभी तो इसका ऐसा दुष्ट पुत्र है। वह बाहर-भीतर दोनों ओरसे पत्थर है।

कमला—यह मेरा पुत्र नहीं है, शवरी! इतने दिनों तक मैंने जो बात गुप्त रखीथी, उसे प्रकट करतीहूँ। जब मैं अपने पतिके साथ भील नगरमें रहतीथी तो एक दिन मुझे वनमें गुफाके अन्दर एक स्त्री प्रसव-पीड़ासे तड़पती मिली। मैंने उसकी सेवा सुश्रूषा की और उसने बालकको जन्म देकर उसे मुझे सौंपदिया और आप यह कहती हुई सती होगई—'महाराज शिलादित्य! आपकी अभागी पुष्पावती आपके पास पहुंच रही है।'

शवरी—फिर क्या हुआ?

कमला—हमारी कोई संतान तो थी नहीं। मैं उस बालकको घर लेआई तो देखा कि उसके सारे दांत पेटसे ही उगकर आएहैं। सातवें दिन मेरे पतिकी अकस्मात् मृत्यु होगई। मृत्युसे पूर्व उन्होंने बतलायाथा कि यह बालक महान दुर्दान्त, उद्दंड और वीर होगा। एकछत्र राज्यकी स्थापना करेगा। जिस किसीके आश्रयमें यह रहेगा उसीको विपत्ति-सागरमें डुबादेगा।

शवरी—ठीक है, कमला! सचमुच यह तेरा पुत्र नहीं है। इसे तू शीघ्र त्यागदे। भीलराज सुनेगा तो तेरी झोपड़ीपर आग लगादेगा और तुझे और तेरे पुत्रको यमलोक या कारागारमें पहुंचादेगा।

कमला—ठीक है, बहिन! (पट)

२

ईडर राज्यमें, हारीत मुनिके आश्रमके निकट,
एक वन प्रान्त

(बाली, तक्षक आदि भीलकुमार काष्ठ पाषाणादिसे दुर्ग बनारहेहैं ।)

बाली—*(दुर्ग बनजानेपर एक ऊंचे पाषाणखंडपर बैठकर)* मैं इस दुर्गका राजा हूं। यह विमला मेरी रानी है। तुम सब मेरी प्रजा हो। तुम्हें मेरे सन्मुख हाथ जोड़कर खड़ारहनाहोगा। प्रजाको राजभक्त और आज्ञापालक होनाचाहिए।

शेष भीलकुमार—ठीक है, महाराज! महाराज बालीराजकी जय!

बाली—तक्षक! तुम हमारे मंत्री बनो। इस छोटे आसनपर बैठो। तुम्हारा कार्य हमें अच्छे सुझाव देना तथा जनताकी कष्ट-कथाको हमारे कानोंतक पहुंचाना होगा।

तक्षक—ठीक है, महाराज! जो राज्य-मंत्री दीनप्रजाके हितको भुलाकर अपने स्वार्थसाधनकी ओर प्रवृत्त होतेहैं वे अपने नीचाचारके कारण समस्त राष्ट्रको भी लेडूबतेहैं।

प्र० भीलकुमार—जिन मंत्रियोंको अपने सुखविलाससे अवकाश नहीं मिलता, जिन्हें सदा अपने पिट्ठुओंको उच्च पदों पर प्रतिष्ठित करनेकी ही चिन्ता बनीरहतीहै, जो दीन जनताके हितकी ओरसे अपनी पीठ फेरलेतेहैं तथा रिशवत लेकर अपना कोष बढ़ातेहैं, वे नीच मंत्रीपदका अपमान करतेहैं।

द्वि० भीलकुमार—हम आपकी प्रजा हैं, महाराज भीलराज! प्रजा किसी व्यक्तिको इसलिए अपना अधीश्वर बनाकर उसके हाथोंमें अपनी स्वतंत्रता और अपने देश और जातिकी भाग्यनौका

सौंपतीहै कि वह व्यक्ति उनकी रक्षाकरे और जनताके भरण-पोषणका ध्यान रखे।

प्र०भीलकुमार—जिस राजाके राज्यमें प्रजाको पेटभरनेकेलिए समुचित भोजन, तन ढांकनेकेलिए यथेष्ट वस्त्र नहीं प्राप्त होता, धनिकों और उच्च पदाधिकारियोंके स्वार्थके सन्मुख निरीह प्रजाके अधिकारोंका बलिदान करदियाजाताहै, वह राजा और उसके मंत्री शूलीपर चढ़ानेके योग्य हैं।

बाली—तुम्हारा कथन सत्य है। मैं दत्तचित्तसे तुम्हारी सेवा और रक्षा करूंगा। किन्तु मुझसे यह आशा न रखना कि मैं भी तुम्हारे ही समान सीधा-सादा, विलासहीन,निर्धन जीवन व्यतीत करूं। मेरे प्रासादको, जिसमें देश-विदेशके अनेकों दूत और राजकर्मचारी पधारेंगे राष्ट्रकी शानके अनुकूल सजाकर रखना होगा। आओ, मेरी रानी विमला! मेरे सिंहासनके वामभागपर विराजो।

विमला—*(पाषाणखण्डपर बालीके वाम भागमें बैठतीहुई)* हां, मैं तुम्हारी रानी बनूंगी।

सब भीलकुमार—महाराज बालीराजकी जय! महारानी विमलादेवीकी जय!

तक्षक—*(उठकर)* बाली! अब अपना छत्र-सिंहासन मुझे दो। अब मैं राजा बनूंगा। तुम मेरे मंत्री बनोगे और विमला-देवी मेरी रानी बनेगी।

बाली—*(अपने पाषाणखंडसे उठकर तक्षकके पाषाणखंड पर बैठतेहुए)* तक्षक! यह छत्र-सिंहासन लेलो किन्तु अपनी रानीको मैं तुम्हें न देसकूंगा।

तक्षक—तुम न देनेवाले कौन हो? सिंहासनके साथ मुझे

रानी भी मिलेगी। मैं उसे बलपूर्वक छीनलूंगा। आओ, विमला! मेरी रानी बनो।

बाली——ऐसा न होसकेगा। मेरी रानी तुम्हारी रानी न बनसकेगी।

विमला——मैं तो सिंहासनकी रानी हूँ। जो सिंहासनपर बैठेगा मैं उसीकी रानी बनूंगी।

तक्षक——मैं, भीलराज महाराजा तक्षक आज इस सिंहासन पर प्रतिष्ठित हूँ। पाषाण-निर्मित होनेपरभी सिंहासन! तू विधाताकी सृष्टिको पलटडालताहै। एक सामान्य दुर्बल मानवको लक्ष-लक्ष मानवोंका भाग्य विधाता बनाडालताहै। जिसे तुझपर आसीन होनेका सौभाग्य प्राप्त होजाताहै, उसकी वाणीमें यमराज और मृत्युंजयकी शक्तिका समावेश होजाताहै। उसके शरीरमें सहस्रों हस्तियोंका बल और लक्षों मानवोंका साहस प्रविष्ट होजाताहै। उसके संकेत-मात्रपर सहस्र-सहस्र व्यक्ति अपने प्राण उत्सर्ग करनेको प्रस्तुत रहतेहैं।

सब भीलकुमार——महाराजा तक्षकराजकी जय!

तक्षक——(*पत्तोंका किरीट पहनकर*) इस किरीटको धारण करतेही क्षुद्र मानव-मस्तक हिमालय-सा उच्च, समुद्र-सा गहन, दावानल-सा दुर्दान्त और दैत्य-सा कठोर होजाताहै, सृष्टिके अन्य मानव उसके दृष्टिपथमें कीड़े-मकोड़े बनकर रेंकनेलगतेहैं। अतृप्त लालसा और अदम्य गर्व उसके रोम-रोममें व्याप्त होजाताहै। और वह दूर्वादलपर मत्त मात्तङ्ग-सा इतर सृष्टिको कुचलता हुआ मस्त होकर चलताहै। कवियोंकी वाणी, धनिकोंका धन, श्रमिकोंके जीवन, और सुन्दरियोंके तन-मन उसके चरणोंपर लोटनेलगतेहैं। धन्यहै राजमुकुट! तुझे धन्य है!!

सब भीलकुमार—महाराजा तक्षकराजकी जय ! परम प्रतापी भीलराजकी जय !

तक्षक—(*काष्टका राजदंड हाथमें लेकर*) इस राजदंडको ग्रहण करते ही मानवके दुर्बल हस्त सहस्रार्जुनकी सहस्र भुजाओंसे भी प्रबल, परशुरामके कठोर कुठारसे भी तीक्ष्णतर और सहस्राचिकी तप्त जिह्वाओंसे भी ज्वलन्त बनजातेहैं। राजदंड ! तुम्हें धारण-करनेवालेका कथन ही न्याय है, और कार्य ही धर्म है। राजदंड ! तुझे धन्य है !

सब भीलकुमार—महाराजा तक्षकराजकी जय !

(*गुहका प्रवेश*)

गुह—किस महाराजके जयजयकारसे धरती-आकाश और वन-कन्दराओंको गुंजाररहेहो ? सूर्यके रहतेहुए कौन गगनमंडल-पर उदयहोनेका साहस करताहै ? सिंहकी उपस्थितिमें कौन वनप्रान्तरमें गरजनेका साहस रखताहै ?

सब भीलकुमार—महाराजा तक्षकराजकी जय !

गुह—उतरो तक्षक ! इस सिंहासनसे उतरो। यह सिंहासन मेरा है। जिसकी भुजाओंमें दूसरोंका दमनकरनेकी शक्ति नहीं, जिसके हृदयमें अग्निके समान दूसरोंको भस्मकरनेकी महत्वाकांक्षा नहीं; जिसके मानसमें सिंधु-सा गरजने और सिंह-सा झपटनेका साहस नहीं, वह दुर्बल कैसे दूसरोंका राजा बनसकताहै ? राजा मैं बनूंगा। मैं जीवित सिंहोंको पकड़कर उनकी दंतावलि उखाड़ सकताहूँ, वनहस्तीकी सूंड पकड़कर मरोड़सकताहूँ, पर्वतशिखरसे समुद्रमें छलांग लगासकताहूँ और तुम जैसे अनेकोंकी खोपड़ियों-को एक मुक्केमें चूरकरसकताहूँ। हटो, मेरे सिंहासनसे हटो। (*तक्षकको धक्का देकर दूर पटकदेताहै।*) यह मेरा सिंहासन है। यह मेरी रानी है।

बाली—सिंहासनकी रानी विमला! तुझे धन्य है। मेरी रानी बनकर तू तक्षककी रानी बनी और अब गुहकी!

तक्षक--सिंहासन हमारा है, गुह! हम तुम्हें सिंहासनपर नहीं बैठनेदेंगे। हम अपने सिंहासन और रानीके अर्थ रुधिरकी नदियां बहादेंगे। आओ, मेरे प्यारे भील साथियो! मेरा साथ दो। यह ब्राह्मण छोकरा सदा हमें कष्ट देताहै। हम आज इससे सदाका प्रतिशोध लेंगे। सिंहासन हमारा है, हम भील-क्षत्रियोंकाहै। ब्राह्मणका छोकरा होकर भी यह सिंहासनपर बैठनाचाहताहै!

गुह--सिंहासन वीरोंकी भोग्यवस्तुहै, तक्षक? वह किसी जाति-विशेषका अपना सुरक्षित स्वतंत्र स्थान नहीं है। सिंहासन पर बैठनेकी कसौटी पराक्रम और साहसहै। जब सिंहासनको किसी जाति-विशेष या परिवार-विशेषकी अपनी स्वतंत्र सम्पत्ति समझाजानेलगताहै तो राष्ट्रके विनाशकी घड़ियां निकट आपहुंचतीहैं, योग्यताका तिरस्कार होताहै, वीरत्वका ह्रास होताहै, और भोगविलास, छलकपट, स्वार्थपरता तथा दीनोंका शोषण आरंभ होताहै।

तक्षक—मिथ्या प्रलाप बन्दकरो, गुह! राष्ट्रकी रक्षाकेलिए जिस अदम्य उत्साह, महान त्याग और असीम वीरत्वकी आवश्यकता होतीहै, वह परम्परागत उच्चकुलोंमें ही प्राप्त होसकताहै। सहस्र-सहस्र जनतापर शासन करने, दुष्टों, लोलुपों और आततायियोंका नियंत्रण करके सत्पुरुषोंकी रक्षाकरनेकी शक्ति नीच कुलोत्पन्न दुर्बल पुरुषोंमें नहीं होसकती। तराजूतोड़ों और भिखमंगोंसे राष्ट्रकी रक्षा न होसकेगी। कुत्ता राजा बनेगा तो जूतेही चाटेगा। भिश्ती राजा बनेगा तो चर्ममुद्रा ही चलाएगा। सिंहासन क्षत्रियका है और उसी का रहेगा।

गुह—(*तक्षकको चपेट मारकर*) दिखला तो अपना क्षत्रिय-कुलका वीरत्व ? एक चपेट मारताहूँ तो पांच गज दूर जापड़ताहै और फिर भी कहताहै, 'मैं क्षत्रिय हूँ। मैं ही सिंहासनका अधिकारी हूँ।' बल-पौरुष भी क्षत्रियकी बपौती हैं ? तुम सब मिलकर आओ मुझसे लड़ो और देखो कि तुम भील-क्षत्रियोंमें अधिक बाहुबल है या मुझ ब्राह्मण-कुमारमें।

तक्षक—आओ, मेरे भीलवीरो ! आज इस ब्राह्मण छोकरेको दिखादें कि सिंहासनका अधिकारी कौन है ?

बाली—नहीं, ऐसा न होगा। इस पाषाण-सिंहासनकेलिए हम एक-दूसरेका रुधिर न बहाएंगे। यदि खेलमें बनाहुआ पाषाण-सिंहासन भी भ्रातृत्वको भुलाकर खेलके साथियोंको एक दूसरेकी रुधिर-वर्षाकेलिए कटिबद्ध करदेताहै तो हे चमकीले स्वर्णसिंहासन ! तेरेलिए मदान्ध नरेश अपना विशाल सैन्य और अस्त्र-शस्त्र लेकर जो अत्याचार, हाहाकार, अग्निकांड और हत्याकांड मचादें वह सब थोड़ा है।

तक्षक—नहीं, हम रुकेंगे नहीं, हम युद्ध करेंगे।

बाली—युद्ध नहीं होगा। हम लोग अपने खेलके साथियोंके रुधिरमें अपना खड्ग भिगोकर उसे कलंकित नहीं करेंगे। क्रीड़ा-मित्रोंकी रुधिरधारासे धरती कलंकित होकर रसातलको पहुंचजाएगी, वायुमंडल दग्ध और दूषित होउठेगा, तथा आकाश संतप्त होकर अश्रु-वृष्टि करने लगेगा।

(नेपथ्यसे खरतालकी ध्वनि और गीत।
हारीतमुनिका गातेहुए प्रवेश।)

हारीत—*मानव ! मीठा बोल, प्यारे मानव ! मीठा बोल।*
कटुक वचनसे जीवन-मधुमें दुख-मंदिरा मत घोल ॥मा०॥

प्रेम-कुंजिकासे, गद्गद् हो, हृदय-पिटारी खोल।
सरल सरस वचनोंको बोलो सत्य-तराजू तोल ॥मा०॥
कलह-गर्व-अभिमान भुलादो, प्रेमद्वार दो खोल।
सांस निकलजानेपर प्यारे! तन-धनका क्या मोल? ॥मा०॥

बाली--इस विवादका निर्णय महामुनि हारीत करेंगे।

सब भीलकुमार--हां, हमको हारीतमुनिका निर्णय मान्य होगा!

बाली—मुनिराज! हमलोगोंमें राजा बननेका अधिकारी कौन है?

हारीत—(हंसकर) प्रजाके कष्टोंको दूर करके जो निरीह प्रजा-को सुरक्षित, स्वस्थ और सकुशल रखसकताहै, जो देश, प्रजा और धर्मकी रक्षाकेलिए अपने प्राणोंको अर्पित करसकताहै, वही राजा बननेका अधिकारी है।

बाली—यह तो ठीक है। किन्तु आप कृपापूर्वक यह बतलाइए कि हम सबमें राजा बननेका अधिकारी कौन है?

हारीत—(*सबके मुखपर बारी-बारीसे देखकर*) तुम सबमें बल्लभीनरेश महाराजा शिलादित्यका पुत्र यह गुहादित्य ही सम्राट बननेका अधिकारी है। यह वीर, जो आज तुम्हारे साथ वन-वन भटकता, पशु-पक्षियोंका आखेट करताफिरताहै, अति शीघ्र एक विशाल साम्राज्यकी स्थापना करके इसी प्रकार दस्युदल का आखेट करेगा। इस महावीरके पदाघातसे वसुधा कंपित होगी, आकाश चंचल होगा और समुद्र विक्षुब्ध होउठेगा। इस वीरसे उस महान वंशकी उत्पत्ति होगी जो वीरत्व, धर्म-प्रेम, पराक्रम और त्यागकेलिये हिन्दुस्थानमें अग्रगण्य समझाजाएगा। बल्लभी नरेश महाराजा शिलादित्यके इस परम पराक्रमी पुत्र गुहादित्यकी गौरवगाथा युगयुगान्तरतक देश-देशमें गाई जाएगी।

तक्षक—मुनिराज ! जिसे आप महाराजा शिलादित्यका पुत्र कहरहेहैं, वह तो निर्धन ब्राह्मणी कमलाका पुत्र है।

हारीत—मेरा कथन असत्य नहीं होसकता, भीलकुमार ! चलो, मेरी कुटियामें चलकर वह समस्त विचित्र दृश्य देखो कि किसप्रकार दस्युगणोंके पदाघातसे बल्लभीके विध्वंश होनेपर यह राजकुमार ईडरके बनप्रांतोंकी शरणमें पहुंचा।

सब भीलकुमार—आश्चर्य है।

बाली—हारीत मुनिका कथन असत्य नहीं होसकता। चलो, चलकर देखें। *(सबका प्रस्थान)*

३

ईडर—भीलराज मांडलिकके प्रासादका द्वार

(द्वारपाल द्वारपर खड़ाहै। चूंडारावका प्रवेश)

चूंडाराव—द्वारपाल जी ! मुझे भीलराजसे मिलनाहै। आप तो कुछ कहते ही नहीं। द्वारपाल जी ! आप तो सुनते ही नहीं।

द्वारपाल—मैं सुनूं कैसे ? मैं तो बधिर हूँ। जब तक आपके पास बधिरता दूरकरनेकी औषधि न हो तब तक मैं आपकी बात कैसे सुनसकताहूँ ?

चूंडाराव—मैं फूलनगरका राव चूंडा हूँ।

द्वारपाल—तो क्या करूं ? आपका नाम कोई वेदमंत्र नहीं जो मेरी बधिरता दूरकरदे।

चूंडाराव—मेरा बकरा वीरनगरके छोकरोंने खाडालाहै।

द्वारपाल—तो मैं क्या करूं ? जिसे छोकरोंने खाडाला उससे मेरी बधिरता कैसे दूरहोसकेगी ?

चूंडाराव—द्वारपालजी ! फिर आपकी बधिरता कैसे दूरहोगी ?

द्वारपाल—अरे महामूर्ख। द्वारपालका अर्थ समझते हो? जिसका पालन द्वारसे हो वह द्वारपाल। अजापालको अजासे दूध मिलताहै, वस्त्र मिलताहै। गोपालको गौ से दूध मिलताहै, दही मिलताहै, घी मिलताहै, धन मिलताहै। मेरी अजा, मेरी गौ, यह द्वार ही है।

चूंडाराव—अब समझा।

द्वारपाल—क्या समझे?

चूंडाराव—यही कि ... ...

द्वारपाल—यही नहीं। यदि तुम्हारे पास चाँदीकी कुंजी है तो हमारे कानोंके बधिर कपाटको खोलकर अपने वचनोंको अन्दर पहुँचासकतेहो। नहीं तो —

चूंडाराव—हां, अब समझा।

द्वारपाल—क्या समझे?

चूंडाराव—यही कि चांदीके रुपयेके दर्शनसे आपका हृदय प्रफुल्लित होता है, आपके कान सुनतेहैं, आंखेंदेखतीहैं और मुख आशीर्वाद देताहै।

द्वारपाल—दर्शनसे नहीं, हाथमें स्पर्शन से! आंख के सन्मुख ठनठनसे!

चूंडाराव—हां अब समझा, यह लीजिये, चांदीकी कुंजी *(रुपया देता है)* और मुझे भीलराजके प्रासादमें प्रवेश करनेकी आज्ञा देदीजिए।

द्वारपाल—मैं क्षुद्र द्वारपाल आपको भीलराजके प्रासादमें प्रवेश करनेकी आज्ञा कैसे देसकताहूँ? यह आज्ञा तो देती है चांदीकी कुंजिका। *(रुपया दिखलाते हुए)* इस चांदीकी कुंजिकासे राजाके प्रासादका द्वार, युवतीके प्रेमका द्वार परमात्माके स्वर्गका द्वार, सब खुलजातेहैं। कौनसा ऐसा कार्य है जिसे यह चांदीकी

कुंजिका सिद्ध नहीं करसकती ? कौनसा ऐसा स्थान है जहां यह चांदीकी कुंजिका नहीं पहुंचासकती ? कौनसा ऐसा सम्मान है जो इस चांदीकी कुंजिकासे प्राप्त नहीं होसकता ? —पट—

४

हारीतमुनिका आश्रम

हारीत—मैं इस यज्ञकुंडमें मंत्र पढ़कर आहुति डालताहूँ। कतिपय क्षणोंमें बल्लभी-विध्वंशका दृश्य उपस्थित होगा। शान्त और स्थिर भावसे सारा दृश्य देखतेरहना। अस्त्रोंकी झनकार और वीरोंकी ललकारसे घबराना नहीं। जो व्यक्ति तुम्हारे सन्मुख प्रकट होंगे वे तुमसे कुछ न कहेंगे।

गुह—बहुत अच्छा।

हारीत—(*मंत्र पढ़कर आहुति डालकर*) अच्छा, स्वस्थ होजाओ।

(*वज्र-गर्जन। कई व्यक्तियोंका भागतेहुए प्रवेश*)

कई व्यक्ति—भागो, भागो। शस्त्र उठाओ। बल्लभीपर यवनोंका आक्रमण होगयाहै। (*भागतेहुए प्रस्थान*)

(*शिलादित्यका प्रवेश*)

(नेपथ्यसे) कई व्यक्ति—बल्लभीनरेश महाराजाधिराज परम भट्टारक शिलादित्यकी जय!

शिलादित्य—बल्लभीनिवासियो! हिन्दुस्थानकी अपार सम्पत्ति पर ललचाकर पारस्यदेशके यवन बादशाह नौशेखांके विशाल सैन्यने सिंधुदेशको रौंदडालाहै। लक्ष-लक्ष हिन्दु गृहोंपर अग्नि धधकाकर उन्हें भस्मावशेष करडालाहै। सहस्रों मंदिरोंको भूमिसात् करदिया है। हिन्दुओंसे उनकी कोटि-कोटि मुद्राओंकी सम्पत्ति

छीनलीहै। लक्ष-लक्ष हिन्दुनारियोंको दासीरूपमें नीलाम करनेके लिए पारस्य और अरबके मरुस्थलोंमें भेजदियाहै।

(नेपथ्यसे) कई व्यक्ति—हाय! हाय!

शिलादित्य—बल्लभीके असीम ऐश्वर्यपर भी यवनोंकी गृद्धदृष्टि लगीहै। इस महानगरीमें लूटमार, हत्याकांड और वलात्कार मचानेकेलिए यवन सेनाध्यक्ष तीन लक्ष दस्युदल लेकर दुर्गके बाहर उपस्थित है। उठो, खड्ग, उठाओ, शत्रुओंका मानमर्दन करो। मातृभूमिकी रक्षाकरतेहुए अपने प्राण विसर्जित करदो।

(सूतका प्रवेश)

सूत—महाराजाधिराज परम भट्टारक बल्लभीनरेशकी जय! सूर्य कुंडसे प्राप्त सप्ताश्वको मैंने आपके रथमें जोड़लियाहै।

शिलादित्य—बल्लभी-निवासियो! मैं अपने सैन्यदलके साथ रणप्रांगणमें जारहाहूँ। आपलोग दुर्गमें सुव्यवस्था रखें और युद्ध केलिए प्रस्तुत रहें।

(सूतके साथ प्रस्थान)

गुह—सूर्यकुंडसे प्राप्त सप्ताश्वकी बात मेरी समझमें नहीं आई, भगवन्!

हारीत—तुम्हारे पिता महाराजा शिलादित्य भगवान सूर्यके उपासक थे। युद्धकालमें जब वे सूर्यकुंडमें स्नान करके भगवान सूर्यको अर्ध्य देतेथे तो उस कुंडसे एक परम प्रबल "सप्ताश्व" नामक अश्व निकलताथा। उसे रथमें जोड़कर वे जिस युद्धमें गमन करतेथे उसमें अवश्य विजय प्राप्त होतीथी।

(दो श्रमणोंका भागतेहुए प्रवेश)

प्र० श्रमण—ये यवन तो बड़े अत्याचारी हैं। निशस्त्र व्यक्ति को मारनेमें भी नहीं सकुचाते। आहतपर भी आक्रमण करदेतेहैं।

रुग्ण, असहाय, वृद्ध-बालकका भी विचार नहीं करते। जिस नारी को पातेहैं उसपर सबके समक्ष बलात्कार करते नहीं लजाते। इनमें मानवता हैही नहीं।

द्वि० श्रमण—हां, ये असभ्य हैं, अज्ञानी हैं, मूर्ख हैं। धर्म और अहिंसाको जानते ही नहीं।

(प्रचडका प्रवेश)

प्रचंड—आचार्य तुलसी जी! नगरके पश्चिम भागमें यवन अनेक गृहोंपर अग्नि धधकाकर भागगएहैं। कई बालक वृद्ध और रुग्ण व्यक्ति उन गृहोंमें तड़परहेहैं। कई गौएं खूंटोंसे बंधीहुईहैं। भागकर चलिए उनकी रक्षा करें।

प्र० श्रमण—रक्षा हमसे क्या होगी, नागरिक! हम किसीकी रक्षा करनेमें असमर्थ हैं। प्रकृतिके कार्योंमें या जीवधारियोंके कार्यकलापमें विघ्न डालनेसे एकान्त पाप लगताहै। यदि हम अग्निमें जलतेहुएको बचादें, यदि किसी जलमें डूबतेहुएका परित्राण करें, यदि किसीको व्याध या आक्रमणकारीके प्रहारसे बचाएं तो जिसकी हम रक्षा करेंगे उसके द्वारा शेष जीवनमें जो पाप होंगे, उनके भागी हम बनेंगे। जाओ, हम उनकी रक्षाकरके एकान्त पापके भागी नहीं बननाचाहते।

प्रचंड—आप दुखियोंकी रक्षाको पाप बतलातेहैं, आश्चर्यहै।

प्र० श्रमण—अज्ञानियोंको आश्चर्य होना स्वाभाविकहै। तुम मूर्ख! अहिंसा और धर्मके तत्वको क्या समझसकतेहो?

प्रचंड—अहिंसाके नामपर अपनेको और मानव-समाजको धोकादेनेवाले श्रमणो! तुमने सशक्त और परम पराक्रमी हिन्दु-जातिको कायरताका अहिफेन पिलाकर मृत और नपुंसक बना दियाहै। हिन्दुजाति के सैनिक राजपूतोंके हाथसे खड्ग दूर फिंकवा

कर तुमने भिक्षापात्र ग्रहण करवायाहै। रण-कौशल और वीरत्वका पाठ भुलाकर उन्हें भिक्षायाचनका मंत्र सिखायाहै। रणांगण-के शिवरोंमें शस्त्र-शय्यापर शयनकरना छुड़ाकर उन्हें संघारामों और विहारोंमें विहारकरना बतलायाहै। उनके मस्तकसे शिखा, किरीट और शिरस्त्राण उतारकर तुमने उन्हें मुंडी बनादियाहै। जो वीर-शरीर प्रतिक्षण अभेद्य लौहकवचोंसे आच्छन्न रहतेथे उनपर तुम ने चीवर-काषाय लपेटाहै। श्रमणो! तुम्हारी अहिंसा हिन्दुस्थान को रसातल पहुंचादेगी।

द्वि० श्रमण—मारके वशीभूत होकर प्रलाप करनेवाले चारण! तू कैसे समझेगा कि यह सब संसार मिथ्याहै, स्वप्नहै, असत्यहै।

प्र० श्रवण—नाऽहं न त्व नाऽयं लोकः

कस्य निमित्तं क्रियते शोकः?

प्रचंड—संसारको असत्य कहकर अपनेको और जगतको प्रवंचित करनेवाले श्रमणो! अपनेदांतोंसे अपनी अंगुली काटकर अनुभव करो, अपनी आंखमें कील ठोकर देखो, अपनेकानमें तेल डालकर सुनो कि तुम असत्य हो या नहीं, संसार स्वप्नहै या नहीं। इस लोकको मिथ्या कहकर परलोककेलिए तपस्या करनेवाले आत्मवंचको! तुम सत्य हो, मैं सत्य हूँ, यह लोक सत्यहै। आज विदेशी विधर्मी यवनोंके आक्रमणसेभी तुम्हारी निद्रा न टूटी, तुम्हारा परलोक सुख-स्वप्न भंग न हुआ तो तुम्हारे जीवनके साथ ही हिन्दुस्थान भी नष्ट होजाएगा।

द्वि० श्रमण—चुपरहो, हिन्दुधर्मकी विरुदावलि गाकर टुकड़ा तोड़नेवाले चारण! सद्धर्मकी निंदा न करो।

प्रचंड—विदेशी विधर्मी यवनोंके तीक्ष्ण खड्ग हिन्दु या श्रमणोंके शिरोच्छेदन करनेमें भेदभाव न करेंगे। उनके पाप-हस्त

मठ-मन्दिरों और संघ-विहारोंको विध्वंश करनेमें संकोच न करेंगे। उनके अग्नि-मशाल हिन्दु और श्रमण दोनोंके भव्य प्रासादोंपर अग्नि धधकानेमें भेद न समझेंगे। उनकी पाप-लालासा हिन्दु और श्रमणोंकी वनिताओंपर बलात्कार करनेमें न सकुचाएगी। चलो, देशकी रक्षाकेलिये आगे बढ़ो।

प्र० श्रमण—इस मूर्खसे कहां तक शिर खपावें? हम अपना अहिंसा-सिद्धान्त भुलाकर हत्यामें प्रवृत्त नहीं होसकते।

(दोनों श्रमणोंका प्रस्थान। शिर मुंडाएहुए अनेक कुमार-कुमारियोंका प्रवेश और 'नाऽहं न त्वं नाऽयं लोकः, कस्य निमित्तं क्रियते शोकः' आदि गातेहुए प्रस्थान।)

प्रचंड—धर्मके नामपर जिस देशके कुमार-कुमारियोंकी खोपड़ियां मूंडकर उन्हें संघारामों और विहारोंकी कोठरियोंमें बन्दकरनेमें ही सर्वश्रेष्ठता प्रतीत होतीहो, उस देशका अधःपतन निश्चित है। अहिंसाके प्रचारको! इस लोकको मिथ्या कहकर परलोकका सुख-स्वप्न दिखानेवाले दार्शनिको! हिन्दुस्थानपर धीरे धीरे जो दासता-बेड़ियां जकड़ीजारहीहैं, उनकेलिए तुम्हारे मिथ्या सिद्धान्त उत्तरदायी हैं। परतन्त्रताके दमनचक्रमें पिसतीहुई हिन्दुजाति भविष्यमें तुम्हें श्राप देगी।

(नेपथ्यमें—युद्ध-वाद्य। मातृभूमिकी जय! महाराजाधिराज परम भट्टारक बल्लभी-नरेश शिलादित्यकी जय!" का तुमुलनाद)

प्रचंड—महाराजाधिराज शिलादित्य युद्धमें विदेशी विधर्मियों का मानमर्दन करके लौटरहेहैं। चलूं, विजयोत्सवमें भागलेने चलूं। *(प्रस्थान)*

बाली—आश्चर्य! आश्चर्य!!

गुह—अपने पूज्य पिता महाराजाधिराज शिलादित्यका वैभव

और वीरत्व देखकर मेरे अंग-अंगमें रोमांच होगयाहै। आंखोंसे अश्रु निकलपड़ेहैं, स्वर विकम्पित होरहाहै। पितः! यदि अब मैं आपके दर्शन करसकूं तो आपके चरणोंसे लिपटजाऊंगा।

हारीत—नहीं, गुहादित्य! जो मायामय शरीर मंत्रबलसे तुम्हारे सन्मुख उपस्थित होरहेहैं, उन्हें स्पर्शकरनेका, उनसे वार्तालापकरनेका साहस न करना।

(नेदथ्यमें—वज्र-गर्जन। प्रचंडका पुनः प्रवेश)

प्रचंड—यवनोंने हमें विजयोत्सवमें मग्न समझकर अचानक बड़ा प्रबल आक्रमण करदियाहै और दुर्गका पश्चिम द्वार भग्न करदियाहै। नगरमें खलबली मचगईहै। हमारा सैन्य अस्तव्यस्त होकर भागरहाहै। शीघ्र महाराजाधिराजको सूचना देताहूँ। उनकी प्रार्थनापर सूर्यकुंडसे सप्ताश्वके निकलतेही यवन पीठ दिखाकर भागखड़ेहोंगे। चलूं।

(महाबलाध्यक्ष भीमकर्माका प्रवेश)

भीमकर्मा—सप्ताश्व नहीं निकलसका, प्रचंड! देशद्रोही महामात्य जीवमित्रद्वारा सप्ताश्वका रहस्य जानकर यवनोंने सूर्यकुंडको गोरक्तसे दूषित करदिया है। महाराजाधिराज यवनोंद्वारा दुर्ग-द्वारके भग्नहोनेका समाचार सुनकर जब कुंडके पास पहुंचे तो अनेक प्रार्थना करनेपर भी सप्ताश्व न निकला।

प्रचंड—वह देशद्रोही अब कहां है?

भीमकर्मा—यवनोंसे पुष्कल सुवर्ण लेकर वह नीच बल्लभीका भावी अधिपति बननेकी लालसासे विधर्मी विदेशियोंके शिविरमें चलागयाहै।

(शिलादित्यका प्रवेश)

शिलादित्य—महाबलाध्यक्ष! जीवमित्रके देशद्रोह और सप्ताश्वके

न निकलनेपर शोककरना छोड़कर चलिए रणप्रांगणकी ओर प्रस्थान करिए। महाबलाध्यक्ष ! जबतक शिलादित्यके धड़पर शिर है, शरीरमें प्राण है, हस्तमें खड्ग है, तबतक मातृभूमिको विदेशी विधर्मियोंसे पददलित न होनेदियाजाएगा। चलिए। प्रचंड ! महारानी पुष्पवती गर्भिणी है। उसके गर्भसे हमारे वंशकी परम्परा चलसकेगी। तुम उसे लेकर उसके पिताके पास चन्द्रावती नगरीमें चलेजाओ। शीघ्रता करो। दुर्गका पतन निकट है।

प्रचंड—मैं महाराजाधिराजके साथ रणप्रांगणमें जाकर प्राण त्यागकरना चाहताथा। किन्तु सूर्यवंशके भावी वंशधरकी रक्षाके निमित्त मैं अपनी लालसाको कुछ कालकेलिए संवरण करलूंगा। बलभी-सम्राट ! सदाकेलिए प्रणाम।

(शिलादित्य और भीमकर्माका बाह्यमार्गसे और प्रचंडका अन्तरमार्गसे प्रस्थान)

(अन्तर्यवनिकारोहण। जलती चिताके सन्मुख महारानी विद्यावतीके साथ अनेक नारियां और बालक-बालिकाएं उपस्थितहैं।)

विद्यावती—बहिनो ! मातृभूमिकी स्वतंत्रता, सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षाकेलिए हमारे पतिदेव युद्धस्थलमें गएहैं। दुर्गका पश्चिमद्वार भग्न होचुका है। अब दुर्ग-पतन निश्चित है। अस्तु आओ, अपने धर्म और सतीत्वकी रक्षाकेलिए अपने इन सुन्दर शरीरोंको, जिन्हें हस्तगत करनेकेलिए नीच यवन प्रयत्नशील हैं, अग्निमें होम करदें।

प्र० नारी—महारानी विद्यावतीकी जय ! महारानी ! हम सब आपकी आज्ञा पालनकरनेकेलिए प्रस्तुत हैं।

(विद्यावती और नारियां चिताके चारों ओर खड़ीहोकर गातीहैं ।)

गीत—युगयुगान्त तक अमर रहेगी दारुण करुण कहानी ।
विश्व-गगन रोएंगे सुनकर आरत हिन्दूवाणी !!
लक्ष-लक्ष हिन्दू अबलाएं बिकीं दासियां बनकर !
टके-टकेमें हिन्दू-बालक हाय ! बिकगए घर-घर !!
नग्न नारियोंके जलूस लख सूर्य छिपा शरमाकर !
एक नारिसे बीस-बीसका बलात्कार ! हे ईश्वर !!
कूप-अङ्क, सरिता-जलने लक्षोंकी लाज बचाई !
लक्ष-लक्षने अग्निकुंडमें जलकर रक्षा पाई !
लक्ष-लक्षने पत्नी-पुत्री-भगिनी-वध निज करसे
किया ! लक्षने पिला हलाहल, हा ! यवनोंके डरसे !
भूल न जाना भावी भारत ! दारुण करुण कहानी !
विश्व-गगन रोएंगे सुनकर आरत हिन्दूवाणी !!

विद्यावती—मातृभूमि ! अपनी स्वतंत्रता, सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षाकेलिए हम सहस्रों नारियोंका वलिदान ग्रहण कर । (चितामें कूदपड़तीहै । क्रमशः समस्त नारियां और बालक-बालिकाएं चितामें कूदपड़तीहैं ।)

(अन्तर्यवनिका अवरोहण)

सब भीलकुमार—हाय ! हाय !!

बाली—ऐसा दारुण दृश्य कभी नहीं देखा ।

हारीत—अत्याचारी यवनोंके हाथसे अपने धर्म और सतीत्व की रक्षाकेलिए इस प्रकार अपने शरीरको जीवित ही भस्म करदेने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय हिन्दु-अबलाओंकेलिये नहीं है ।

(वज्रगर्जन । नेपथ्यमें कोलाहल, हाहाकार, स्त्री-बालकोंके चीत्कारका शब्द । "मार डालो," "बन्दी बनालो," का तुमुल नाद । यवन सेनाध्यक्षका-प्रवेश)

यवन-सेनाध्यक्ष—मेरे वीर सैनिको ! जिस वीरतासे तुमने

हिन्दुओंको मूली-गाजरके समान काटकर मिट्टीमें मिलायाहै, वह पारिसके इतिहासमें सदा अमर रहेगी। हिन्दुओ! यदि कभी तुम्हारा सत्य इतिहास लिखाजायगा तो उसमें नोशेरवांके वीर सैनिकोंके वीरकृत्योंका वर्णन, भेड़ोंके झुंडपर सिंहके समान झपटनेवाले पारसी वीरोंकी गौरवगाथाको भुलाया नहीं जासकेगा। जाओ, वीरो! दुर्गमें जो एक लक्षके लगभग पुरुष हैं, उन्हें काटडालो। पांच वर्षसे पन्द्रह वर्ष तक की आयुके बालकोंको दास बनालो। मंदिरोंको भूमिसात् करो। देवप्रतिमाओंको भग्न करो। प्रासादोंपर अग्नि धधकादो। सुन्दरियोंको अपने वक्षस्थलसे लगालो। अपने ऊंटोंपर बल्लभीका अपार धन, सुवर्ण, मोती-माणिक और अप्सरा-जैसी सुन्दरियां लादकर पारिसको लेचलो। जाओ। *(प्रस्थान)*

(विक्षिप्तवत् प्रलाप करतेहुए महामात्य जीवमित्रका प्रवेश)

जीवमित्र—*(रोते-रोते)* बल्लभीका यह विध्वंश अब नहीं देखाजाता। हाय! मुझ देशद्रोही कृतघ्न जीवमित्रने शत्रुके पुष्कल धन और बल्लभीके भावी अधिपति बननेकी दुराशासे अपनी मातृभूमिका आपही विदेशी विधर्मियोंसे विध्वंश करवादियाहै। लक्ष-लक्ष हिन्दुओंकी निर्मम हत्याकेलिए कौन उत्तरदायी है? *(वक्षस्थलपर छुरिका चुभाकर)* तू। लक्ष-लक्ष हिन्दु-बालकोंके दासवत् विक्रयकेलिए कौन उत्तरदायी है? *(वक्षस्थलपर छुरिका चुभाकर)* तू। लक्ष-लक्ष हिन्दुबालकोंके दासवत् विक्रयकेलिए कौन उत्तरदायी है? *(वक्षस्थलपर छुरिका चुभाकर)* तू लक्ष-लक्ष हिन्दु नारियोंके सतीत्वहरणकेलिए कौन उत्तरदायी है? *(वक्षस्थल-पर छुरिका चुभाकर)* तू। क्षुद्र स्वार्थकेलिए मातृभूमिको धोका देकर शत्रुसे मिलजानेवाले नीच जीवमित्र! तुझे कभी शान्ति और

सद्गतिकी प्राप्ति नहीं होगी। नरक भी तुझे स्थान न देसकेगा। मानव-कलंक देशद्रोही जीवमित्र ! जा महारौरवका मार्ग संभाल। (*अपना बध करताहै।*)

तक्षक—देशद्रोहियोंका अन्त इसी प्रकार होताहै।

(नेपथ्यमें—"पारिस सुलतान नौशेरखां बहादुरकी जय !"का तुमुल नाद। दो हिन्दु युवतियोंको घसीटकर लातेहुए दो यवनोंका प्रवेश)

प्र० हिन्दु युवती—आततायियों ! मेरे सन्मुख मेरे पुत्र और पतिको मारकर, मेरे अपार धन और आभूषणोंको छीनकर भी तुम्हारी इच्छा पूर्ण न हुई जो मेरा सतीत्व हरना चाहतेहो ? मुझे मारडालो। मुझे मारडालो। भगवान्केलिए दया करो। मुझे मारडालो। मेरे सतीत्वपर कलंक न लगाओ।

प्र० यवन—सुन्दरी ! ऐसा न कहो। पारसी वीर, जहां पुरुषोंकी हत्याकरना जानतेहैं, बालकों और वृद्धोंके टुकड़ेकरना जानतेहैं, वहां वे सुन्दरियोंका सम्मानकरना और उन्हें अपने वक्षस्थलसे लगाना भी जानतेहैं। तुम्हारा यह दिव्य सौंदर्य, अप्सराओंको विलज्जित करनेवाली रूपराशि मेरा कंठहार बनकर रहेगी।

द्वि० हिन्दु युवती—हाय मां ! मैं सती क्यों न होसकी ? विष क्यों न खासकी ? हाय ! मुझे इन यवनोंके आनेसे पूर्व अपना शरीरान्त करनेकेलिए एक छुरी तक न मिलसकी !

गुह—(*झपटकर खड्ग उठाकर*) यह मैं नहीं देखसकता। अबलाओंपर अत्याचार होते देखकर मेरे अंग-अंगमें क्रोधज्वाला भभकउठीहै। आततायियो ! छोड़ो, इन अबलाओंको। नहीं तो देखो, यह मेरा खड्ग !

(हिन्दु युवतियोंको घसीटतेहुए यवनोंका प्रस्थान)

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०
६४६५
पुस्तकालय
इलाहाबाद

हारीत—किसे अपना खड्ग दिखारहेहो, गुहादित्य ? इन मायामय शरीरोंपर जो तपोबलसे तुम्हारे सन्मुख उपस्थित होरहेहैं, तुम्हारा खड्ग आघात नहीं करसकता।

गुह—अपने पिता महाराजा शिलादित्यकी बल्लभी नगरीका इस प्रकार यवनोंद्वारा पतन देखकर मेरा रक्त खौलनेलगाहै, बाहु-दंड फड़कनेलगेहैं, भौंहें चढ़गईहैं और जिह्वा आततायियोंका रुधिर पानकरनेकेलिए तड़पउठीहै।

(वज्र-गर्जन। प्रचंडका प्रवेश)

प्रचंड—गर्भभारसे व्यथित महारानी पुष्पवती अपने पिता चन्द्रावती नरेशके पास भी न पहुंचसकी। यहीं ईडर प्रान्त में, इस गुफामें भूमिपर लेटकर प्रसवपीड़ासे तड़परहीहै। जो पुष्पवती एक दिन विशाल बल्लभी साम्राज्यकी महारानी थी, उसे भाग्य-नौकाके पलटजानेपर गर्भभार लेकर नंगे पैरों वन-वन भटकना पड़ा। जिसे पुष्पशय्यापर भी निद्रा न आतीथी उसे गुफाके कठोर पाषाणपर प्रसववेदनासे तड़पनापड़ा। जिसके संकेत-मात्रपर शत-शत किंकरियां घेरकर परिचर्या करतीथीं, प्रसव-वेदनामें उसकी सेवाकेलिए एक भी नारी न मिलसकी। सिंधु-तरंगोंकी भांति वैभवके उत्थान-पतन, सुख-दुःखके आविर्भाव और तिरोभावकी कल्पना तक मानव नहीं करसकता। ओह, भाग्यहीन मानव! तेरी दृष्टि अनेक प्रयत्न करनेपर भी एक क्षणके सूक्ष्म पटलके पार तक नहीं झांकसकती।

(नेपथ्यमें-बालकका रुदन) बल्लभीके पतन और अपने प्राणनाथके निधनका समाचार सुनकर महारानीका हृदय टूटगयाहै। किन्तु बालककी ममतासे संभव है वह कुछ काल और जीवन धारणकरले।

(शिरपर लकड़ीका भार लेकर कमलाका प्रवेश। नेपथ्यमें बालकका रुदन।

गुह—मेरी मां !

हारीत—चुपरहो।

कमला—लकड़ी लानेकेलिए जिस समय इस वनमें आईथी, उस समय तो यहां कोई नहीं था। अब इस गुफासे बालकके रुदनका शब्द आरहाहै। यह कैसा आश्चर्य है! (प्रचंडको देखकर) तुम कौन हो? इस वनमें कहांसे आए?

प्रचंड—हम कौन हैं, यह न पूछो। गुफाके अन्दर मेरी स्वामिनीकी कुछ सेवा-सहायता करसकतीहो तो करो।

(अन्तर्यवनिका रोहरण। गुफामें लेटकर पुष्पवती बालकको दूध पिलारहीहै। कमलाका गुफामें प्रवेश)

पुष्पवती—बहिन! भगवानने मुझे भुलाया नहीं। मुझ अभागिनीके उद्धारकेलिए तुझे भेजदियाहै। मेरा सर्वस्व लुट-चुकाहै। मेरा सौभाग्य मिटगयाहै। मेरी सहायता करो। मुझे प्राणनाथके पास वीरलोक जानेदो। इस बालकको संभाललो। यदि तुमसे इसका पालन-पोषण और रक्षण होसके तो कर लेना, नहीं तो जहां इसके पिता पहुँचेहैं वहीं यह भी पहुँचजाएगा। इस अभागे बालकको, जिसके दुर्भाग्यने राजप्रसादोंसे भागकर गुहामें जन्मलेनेकेलिए प्रेरित किया, आजसे गुहादित्यके नामसे पुकारना। संभव है इसका यह नाम कभी इसे मेरी इस विपत्तिका स्मरण करासके।

कमला—बहिन! मेरे साथ मेरे घर चलो। मुझसे तुम्हारी जो सेवा होसकेगी, आजीवन करतीरहूंगी। चलो।

पुष्पवती—नहीं, बहिन! अब इस शरीरको जीवित रखनेकी इच्छा नहीं। प्रत्येक मानव अपने जन्मके साथ अपनी भाग्यलिपि

भी लाता है। यदि इसके भाग्यमें जीवित रहकर कुछ कार्य करना होगा तो मेरे आज सती होजानेपर भी यह जीवित रहेगा। यदि इसके भाग्यमें विनाश ही हुआ तो मेरा जीवित रहना भी इसे जीवित न करसकेगा।

कमला—सत्य है, बहिन! मेरी कोई सन्तान नहीं मैं और मेरे पति इसीको, इसी गुहादित्यको, अपना पुत्र समझकर पालेंगे तुम इसकेलिए निश्चिंत रहो। मैं दरिद्र हूँ, तुम्हारे बालककी उचित सेवा न करसकूंगी। किन्तु मैं ब्राह्मणी हूँ, उसे पतित न होने दूंगी।

पुष्पावती—अच्छा, बहिन! प्रचंड!

प्रचंड—(*सन्मुख आकर*) आज्ञा?

पुष्पवती—प्रचंड! इस देवीने इस अभागे बालकके पालन करनेका भार अपने ऊपर लेलियाहै। तुम चिता प्रस्तुत करो। मैं स्नान करके आतीहूँ। लो बहिन! वल्लभीनरेश महाराजा शिलादित्यके इस वंशधरको संभालो। (*बालकको कमलाके हाथों-पर देतीहै।*)

(*पुष्पवती, कमला तथा प्रचंडका विभिन्न मार्गोंसे प्रस्थान*)

(*अन्तर्यवनिका अवरोहण*)

गुह—मेरी माता! हाय! मुझ अभागेके जीवनके कारण तुम्हारी इतनी दुर्दशा हुई! (*रोता-रोता मूर्छित होताहै।*)

हारीत—*गुहको सचेत करके* (परम प्रतापी महाराजा शिला-दित्यके पुत्र गुहादित्य! वीर रोते नहीं, कार्य करतेहैं। विपत्ति-बादलोंसे घबराकर जो घरके कोनेमें जा-दुबकतेहैं, उन कायरोंकेलिए इस वीरभोग्या वसुन्धरामें कोई स्थान नहीं। तुम्हारे पिता महा-राजा शिलादित्य और तुम्हारी माता महादेवी पुष्पवती दोनों

पुण्यश्लोक थे। उन्होंने देशके स्वातंत्र्य, सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षाकेलिए प्राण विसर्जित किएहैं, वे अशोच्य हैं। भूतकेलिए अश्रु बहाना छोड़कर जो वर्तमानकी घड़ियोंका दुरुपयोग नहीं करते उन्हींका भविष्य इस वसुधाको सुख-स्वर्ग बनानेमें समर्थ होताहै।

प्र० भीलकुमार—अवश्य गुहादित्य हम सबमें राजा बननेका अधिकारी है।

बाली—मैं अपने अंगुष्ठके रुधिरसे अभी गुहादित्यका राज-तिलक करताहूँ।

सब भीलकुमार—महाराजाधिराज गुहादित्य की जय!

विमला—मैं इस वीर गुहादित्यकी रानी बनूंगी।

सब भीलकुमार—महादेवी विमलादेवीकी जय!

हारीत—भीलकुमार बाली! आज खेलमें ही अंगुष्ठके रुधिरसे तुमने गुहादित्यके मस्तकपर जो तिलक कियाहै, उसे अब ब्रह्मा भी न मिटासकेगा।

(प्र० भिलनीका भागतेहुए प्रवेश)

प्र० भिलनी—गुह! गुह!! तुम यहां बैठे-बैठे क्या कररहेहो? चूंडारावकी प्रार्थनापर भीलराज मांडलीकने अपने सैनिकोंसे तुम्हारी झोंपड़ीको भस्म करवाडालाहै। और तुम्हारी अभागिनी माता झोंपड़ीकी अग्नि बुझानेके प्रयत्नमें जल-भुनकर मरचुकीहै।

गुह—मैं अत्याचारी चूंडाराव और भीलराज मांडलिकके भव्य प्रसादोंपर अग्नि धधकादूंगा, और इन दोनों आततायियोंके रुधिरसे ही अपनी अभागिनी माताका तर्पण करूंगा। मेरे भील वीरो! जो मेरा साथ देनाचाहतेहैं, आओ।

कई भीलकुमार—हम आपका साथ देंगे। अत्याचारी

मांडलिकको सिंहासनसे उतारकर आपको ईडरके सिंहासनपर बिठाएंगे।

बाली—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय!

कई भीलकुमार—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय!

(हारीत और तक्षकके अतिरिक्त शेषका प्रस्थान)

तक्षक—*(चलते-चलते)* भीलराज मांडलिकके विरुद्ध जिस विप्लवका यहां श्रीगणेश हुआहै, वह शीघ्र प्रचंड दावानलका रूप धारण करसकताहै। भीलोंका अपने देशमें अपना राज्य है। हम अपने स्वातंत्र्यको इतनी सरलतासे नष्ट न होनेदेंगे। मैं अभी जाकर भीलराजको और भील जनताको सतर्क करताहूँ। *(प्रस्थान)*

हारीत—*दुःखनिशाका सुख-प्रभातमें होताहै अवसान।*
सौख्य-दिवसका तिमिर-निशामें होता अस्त निदान॥

(प्रस्थान)

५

फूलनगर

प्र० ग्रामीण—विधवा ब्राह्मणीकी झोंपड़ी जलवाकर चूंडारावने अच्छा नहीं किया।

द्वि० ग्रामीण—बेचारी किसी न किसी प्रकार अपने दिन बितारहीथी, अब झोंपड़ीके जलजानेसे उसकी क्या दशा होगी।

प्र० ग्रामीण—बकरा अकेले उस ब्राह्मणीके पुत्रने ही तो न खायाथा, सारे वीरनगरवालोंके भीलकुमारोंने बकरा खानेमें भागलियाथा।

द्वि० ग्रामीण—किन्तु चूंडारावको दूसरोंसे कहनेका साहस

न हुआ। बेचारी ब्राह्मणीको विधवा, और असहाय देखा तो उसकी झोंपड़ी फूंक डाली।

(तृ० ग्रामीणका प्रवेश)

तृ० ग्रामीण—बेचारी कमला अपनी झोंपड़ीकी आग बुझानेके प्रयत्नमें जल-भुनकर मरगईहै।

प्र० ग्रामीण—मरगईहै ? हाय ! तब तो बड़ा अनर्थ हुआ। निरपराध ब्राह्मणीकी हत्यासे सारे फूलनगरका नाश होजाएगा। अत्याचारी चूंडाराव ! तुझे ब्राह्मणी झोंपड़ीपर आग लगवाते दया नहीं आई ?

(नेपथ्यसे—"अत्याचारी चूंडारावका नाश हो" का तुमुल नाद। खड्ग, भाले और अग्नि-मशालें लेकर बाली आदि अनेक भीलकुमारोंका प्रवेश)

बाली—यही है उस अत्याचारी चूंडारावका प्रासाद, जिसने बेचारी विधवा ब्राह्मणी कमलाकी झोंपड़ीको जलवायाहै।

भीलकुमार—निरपराध ब्राह्मणीकी हत्याकरनेवाले पापी चूंडारावके प्रासादको भस्म करडालो।

द्वि० भीलकुमार—हम इसका फाटक तोड़डालेंगे और इसके प्रासादपर अग्नि धधकादेंगे।

तृ० भीलकुमार—हम चूंडारावके वंशका निर्मूल करदेंगे। उसके बच्चे-बच्चेको काटडालेंगे।

प्र० भीलकुमार—हम उसे दिखादेंगे कि दीन निर्धन प्रजापर अत्याचार करनेका क्या फल मिलताहै।

सब भीलकुमार—ठीक है, ठीक है। महाराजाधिराज गुहादित्य की जय !

तीनों ग्रामीण—ठीक है, ठीक है। अत्याचारीके दमनमें हम तुम्हारा साथ देंगे।

(भीलकुमारों और ग्रामीणोंका प्रस्थान)

(नेपथ्यमें—अग्निकी लपटें, धूम्र। कोलाहल। रोने-चिल्लानेका शब्द)

६

ईडर—भीलराज मांडलिकके राजप्रासादके बाहर

मांडलिक—आज समस्त ईडर राज्यमें घर-घर शवरोत्सव बड़ी धूमधामसे मनायाजारहाहै। जन्मेंसे ही वन्य पशुओंकी भांति प्रकृतिकी गोदमें स्वछन्द फिरनेवाले भीलोंको वर्षमें एक बार आकर यह शवरोत्सव प्रमत्त बनादेताहै। आनन्द-मदिराकी लहरोंमें समस्त भीलराष्ट्र डूबजाताहै और इस वसुधापर ही सुख-स्वर्गकी सृष्टि करनेलगताहै। गाओ, भीलसुन्दरियो! अपने मधुर स्वरसे अमृत ढ़ालो और अपने नूपूरोंकी झङ्कारसे अप्सराओंको विलज्जित करो।

(भील सुन्दरियों नृत्य करतीहुई गातीहैं।)

गीत—*भील-देशमें भील-जनोंका भीलराज्य यह अमर रहे।*
वन-वनमें, घर-घरमें, घाटी-घाटीमें सुख-लहर बहे ॥भी०॥
जलमें मीन, गगनमें खग, बनमें पशुका आखेट करें।
भीलराजके चरणोंमें सब तन-मन-जीवन-भेंट धरें ॥भी०॥
ज्वार-बाजरा हो यथेच्छ, धरती मा सबका उदर भरे।
गौ माता निज दुग्ध-सुधासे सबके दुख-दारिद्य हरे ॥भी०॥

मांडलिक—लो सुन्दरियो ! यह रत्नहारका पुरस्कार ग्रहण करो।

(गलेका हार निकालकर देताहै ।) दरबारी भील सरदार मदिरामें झूमरहेहैं । मुझे भी चक्कर आरहाहै । जाओ, अपने घरोंमें जाकर आनन्द-उत्सव मनाओ ।

(मांडलिकका अन्तर्द्वारसे और भीलसुन्दरियों तथा भील-सरदारोंका बहिर्द्वारसे प्रस्थान)

(खड्ग, भाले और अग्नि-मशालें लेकर अनेक भीलकुमारों और ग्रमीणोंका प्रवेश)

सब—परम प्रतापी महाराजा गुहादित्यकी जय !

बाली—हम झपटकर दुर्गपर अधिकार करलेंगे और अत्याचारी मांडलिकको सिंहासनसे उतारकर उसके टुकड़े-टुकड़े करडालेंगे ।

प्र० भीलकुमार—हम उसके उच्च प्रासादपर अग्नि धधकादेंगे और विरोधकरनेवालोंके रुधिरकी सरिता बहादेंगे ।

(गुहादित्यका प्रवेश)

सब—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय !

गुहादित्य—मेरे वीरो ! आज अत्याचारियोंका रुधिर बहाकर दिखादेनाहै कि गुहादित्य और उसके वीर साथियोंकी बाहुओंमें अत्याचारके प्रतिकारकी कितनी शक्ति है । आगे बढ़ो, प्रासादके उत्तरद्वारपर अधिकार करलो । मैं दक्षिण द्वारपर अधिकार करनेकेलिए दूसरी टोलीका नेतृत्वकरने जाताहूँ । वीर बाली ! तुम इस टोलीका नेतृत्व करो । *(प्रस्थान)*

बाली—जो आज्ञा । बढ़ो वीरो ! बढ़ो वीरो ।

(शवरीका प्रवेश)

शवरी—देशद्रोही भीलकुमारो ! अपने भाले, खड्ग और अग्नि-मशालोंको लेकर कहां जारहेहो ? अरे मूर्खो ! हम भीलोंका अपने देशमें अपना राज्य है । हम स्वतंत्र हैं, सुखी हैं, निश्चिन्त हैं । अपने घरों और वन-पर्वतोंमें चैनकी वंशी बजातेहैं ।

(नेपथ्यमें—"महाराजधिराज गुहादित्यकी जय !" का तुमुल नाद)

शवरी—यह भूमि विकम्पित करके गगन गुंजायमान करने वाला भैरव जयजयकार कहांसे आरहाहै ? क्या राजप्रासादके दक्षिणद्वारपर विप्लवकारियोंका अधिकार होगया ? जाकर देखतीहूँ कि मेरे वृद्ध हस्तोंसे भीलराज्यकी रक्षा होसकतीहै या नहीं, मेरे जीर्ण रक्तसे स्वातंत्र्यदेवी तुष्ट होतीहै या नहीं । *(प्रस्थान)*

(तक्षकका खड्ग-भाले लेकर कुछ भीलों तथा राजसैनिकोंके साथ प्रवेश)

तक्षक—आज शवरोत्सवकी महानिशामें समस्त भीलजातिको मदिरामें प्रमत्त समझकर अरे मूर्खो ! तुम किस कुकृत्यमें प्रवृत्त हुएहो ? देशद्रोहियो ! तुम अपने देशमें, अपने भाइयोंको, अपनेको और अपनी संतानको सदाकेलिए दासता-बन्धनमें बांधनेकेलिए इतनी उत्सुकतासे कहां जारहेहो ?

प्र० भीलकुमार—अत्याचारी भीलराज मांडलिकको सिंहासनसे उतारकर महाराजाधिराज गुहादित्यको ईडरके सिंहासनपर प्रतिष्ठित करनेकेलिए ।

तक्षक—अरे कृतघ्नो ! जिस भीलराजकी छत्रछायामें अबतक सुखशान्तिकी निद्रा सोतेरहेहो, उसके विरुद्ध तुमने खड्ग उठाया-है ! जिस गुहादित्यको तुम ईडरके सिंहासनपर प्रतिष्ठित करने-चलेहो, सिंहासन प्राप्तकरतेही वह तुमसे दासवत् व्यवहार करेगा ।

देश-बिदेशके अनेकों क्षत्रिय-ब्राह्मण आकर राज्यमें उच्च पदोंपर प्रतिष्ठित होंगे। तुम भीलोंको काला, कुरूप कहकर ठुकरायाजाएगा। तुमसे तुम्हारी सुरम्य एवं उर्वरा घाटियां छीनलीजाएंगी और तुम्हें वन-प्रदेशोंमें दासों या पशुओंकी भांति रहनेकेलिए खदेड़दियाजाएगा। तुम्हारे रक्त, तुम्हारी धन-सम्पत्तिको चूसकर भीलेतर जातियां पुष्ट होंगी। चलो, लौट चलो। ऐसा देशद्रोह करके भीलजातिके उज्जवल मुखपर सदाकेलिए कलंककालिमा न पोतो।

(नेपथ्यमें—*"महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय !"*का तुमुल नाद)

बाली—प्रासादके दक्षिणद्वारपर महाराजाधिराज गुहादित्यका अधिकार होगयाहै, और हम अभीतक यहीं इसकी बातोंमें उलझे-रहगए। चलो, आगे बढ़ो। प्रासादद्वारपर अधिकार करो।

तक्षक—देशद्रोहियो ! तुम इस प्रकार नहीं मानोगे ? मेरे वीर साथियो ! तथा राजसैनिको ! देखते क्या हो ? आक्रमण करो। देश-द्रोहियोंके रुधिरकी सरिता बहादो।

(युद्ध। मदिरामें प्रमत्त भील और राजसैनिकोंमेंसे अनेकका वध। शेषका आहत होकर पलायन। तक्षकका आहत होकर धराशायी होना।)

बाली—बढ़ो वीरो ! बढ़ो वीरो। अत्याचारीकी सहायता-करनेवाले अपने भाईकेलिए भी मैं शोक न करूंगा। प्रासाद द्वारपर अधिकार करलो।

(बालीके साथ भीलकुमारोंका प्रस्थान)

तक्षक—आजका यह अभागा दिन भीलजातिके इतिहासमें सदा दुर्दिनके नामसे पुकारा जाएगा, जिस दिन देशद्रोही, जाति-द्रोही, मूर्ख कृतघ्न भीलोंने अपने देशके विरुद्ध आप खड्ग उठाकर

उसे दासताकी बेड़ियोंमें जकड़ाहै। अपने भालों और खड्गोंको भीलोंके रक्तसे रंजित करके कलंकित कियाहै।

(नेपथ्यमें—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय !)

तक्षक—प्रासादके उत्तरद्वारपर भी देश-द्रोहियोंका अधिकार होगया! अब भीलराज मांडलिकका पतन निश्चित है।

(प्रासादके प्रकोष्टपर कोलाहल। खड्ग, भाले, अग्निमशालें लेकर भीलकुमारोंके साथ गुहादित्यका प्रकोष्टपर प्रवेश)

गुहादित्य—धधकादो, राजप्रासादके इन सुरम्य भवनोंपर अग्नि धधकादो। विरोधियोंको मारडालो और समस्त द्रव्य लूटलो।

(मदिरा-प्रमत्त भीलसैनिकोंके साथ मदिरामें झूमतेहुए मांडलिकका प्रकोष्टपर प्रवेश)

मांडलिक—प्यारे भीलकुमारो! आज आपलोगोंने अपने राजाके विरुद्ध खड्ग क्यों उठायाहै ?

बाली—हम आपको अपना राजा नहीं चाहते।

प्र० भीलकुमार—हमारा राजा गुहादित्य है।

सब भीलकुमार—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय !

मांडलिक—गुहादित्य! यदि मेरी समस्त प्रजा तुमको ही अपना राजा देखनाचाहतीहै तो लो यह राजमुकुट और यह राजदंड धारण करो। राजसिंहासन प्रजाका है, प्रजा जिसे चाहे उसपर बिठलाए। राजा तो प्रजाकी इच्छाओंका प्रतीक है, उसके देशका प्रहरी-मात्र है।

गुहादित्य—*(मुकुट पहनकर और राजदंड हाथमें लेकर)* आपका राजमुकट और राजदंड तो मैंने ग्रहण किया, मांडलिक! अब एक दीन विधवा ब्राह्मणीकी झोंपड़ी भस्मकरने और उसे जीवित

जलादेनेका दंड भोगो। (*खङ्गसे मांडलिकका शिर उड़ाताहै। मांडलिकका शिर कटकर, प्रासादके बाहर जहां तक्षक खड़ा है, वहां पड़ताहै। भीलकुमार मदिरा-प्रमत्त सैनिकोंका बध करतेहैं।*)

सब भीलकुमार—महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय!

(*प्रकोष्टसे सबका प्रस्थान*)

तक्षक—(*मांडलिकका शिर हाथमें लेकर*) गुहादित्यके खङ्गसे आज भीलराज मांडलिकके अध:पतनके साथही भीलोंकी स्वतंत्रता सभ्यता और संस्कृतिका भी अध:पतन होगयाहै। धरती! आज तेरे वालुकणोंने जिस परम पावन रुधिरका पानकियाहै, वह इस वसुधामें फिर किसीमें न दिखाईदेगा। मातृभूमि ईडर! आज तू असहाय है, विधवा है। आज तेरे पतिका शिरोच्छेद करके एक आततायीने तेरे ऊपर बलात्कार कियाहै, और तेरे कुपुत्र कृतघ्न भीलोंने उसमें योग दियाहै! जा फिर मातृभूमि! रसातलको जा, दग्ध होजा, और अपने साथ अपने इस अभागे पुत्र तक्षकको भी विनाशके गर्तमें लेजा।

(*भूमिसे मृतिका उठाकर मस्तकपर मलताहै।*)

(*वाद्य। "महाराजाधिराज गुहादित्यकी जय!" का प्रचंड नाद करतेहुए भीलकुमारोंका प्रासादके बाहर प्रवेश। उनके मध्यमें राज-मुकट पहने और राजदंड धारणकिएहुए गुहादित्यका, उसके वाम भागमें राजमुकुट तथा रत्नाभूषण पहने विमलादेवीका और दोनोंके पीछे रजतदंड धारणकियेहुए बालीका प्रवेश। उनके पीछे "महाराजा गुहादित्यकी जय!" का प्रचंड नाद करतेहुए अनेक भीलोंका प्रवेश*)

तक्षक—मातृभूमिको दासताकी बेड़ियोंमें बांधकर हर्षोल्लाससे जयजयकार करनेवाले मूर्ख भीलो! तुम्हारे सुखके दिन आज नष्ट होचुकेहैं। (*अपना वध करता है।*)